UP Board Notes Class 6 Sanskrit Chapter 8 शङ्कराचार्यः

शब्दार्थाः –

दिवंगतः = मृत्यु हो गई,
पूर्णालदी तीरे = पूर्णानदी के तट पर,
प्राविशत = प्रवेश किए,
आक्रोशत् = चिल्लाये,
श्रुत्वा = सुनकर,
सद्यः – तुरन्त,
शीघ्र, लब्ध्वा = प्राप्त किये,
निरच्छन् = निकल गए,
संस्थापितवान = संस्थापित किये,
द्वात्रिंशे वयसि = बत्तीसवें वर्ष में ।।

केरलराज्यस्य……………आसीत् ।
हिन्दी अनुवाद – केरल प्रदेश की पूर्णा नदी के किनारे पर एक शङ्कराचार्य का जन्म हुआ। इसके पिता का नाम 'शिवगुरु' और माता का नाम आर्याम्बा था। शङ्कर के बचपन में ही शिवगुरु स्वर्ग सिधार गये। अतः आर्याम्बा ने ही शड्रकर का पालन-पोषण किया। बाल्यकाल से ही वह अत्यधिक प्रतिभासम्पन्न था।

एकदा……………लिखितवान् ।
हिन्दी अनुवाद – एक बार शङ्कर ने स्नान के लिए नदी में प्रवेश किया। वहाँ एक मगरमच्छ ने उसको पकड़ लिया। वह जोर-जोर से चिल्लाया। माता उस (चिल्लाने) को सुनकर नदी के किनारे पर आ गयी। तब शङ्कर ने माता से कहा- माता! सन्यास ग्रहण करने के लिए मुझे अनुमति दे दो। तब ही मैं मगरमच्छ से मुक्त होऊगा।" आर्याम्बा शङ्कर का सन्यास ग्रहण करना नहीं चाहती थी। किन्तु पुत्र का कष्ट देखकर जैसा तुम चाहते हो वैसा करो' ऐसा कहा। शीघ्र ही शङ्कर मगरमच्छ से मुक्त हो गया। सन्यास के लिए अनुमति पाकर शङ्कर घर से निकल गया। आठ वर्षीय उसने (शङ्कर ने) ओंकारेश्वर क्षेत्र में आचार्य गोविन्द पाद से ज्ञान प्राप्त किया। बारह वर्षीय शङ्कर पूरे देश का भ्रमण करके काशी पहुँचा। सोलह वर्ष की अल्प अवस्था में उस (शङ्कर) ने ब्रह्मसूत्र का भाष्य (टीका) लिखा।

आदिशङ्कर…………………विद्यते। |
हिन्दी अनुवाद – आदिशंकर ने अनेक प्रकार के मधुर स्तोत्रकाव्य भी रचे। उसने धर्म की रक्षा के लिए देश की चारों दिशाओं में चार मठों को संस्थापित किया। केवल बत्तीस वर्ष की अवस्था में ही शङ्कराचार्य ने ब्रह्मभाव प्राप्त किया। (अर्थातू वैकुण्ठ धाम को प्राप्त किया)। आदि शङ्कराचार्यः भारतवर्ष की एकता को बनाये रखने में और सनातन धम की प्रतिष्ठा करने में सब प्रकार से स्मरणीय हैं।

https://www.evidyarthi.in/